Result Mitra Daily Magazine

छत्तीसगढ़ का नया टाइगर रिजर्व गुरु घासीदास – तमोर पिंगला

➢ हालिया संदर्भ :

- इस महीने की शुरुआत (नवंबर–2024) में छत्तीसगढ़ की राज्य सरकार ने "गुरु घासीदास–तमोर पिंगला" को भारत के 56 वें बाघ अभ्यारण के रूप में अधिसूचित किया है।
- छत्तीसगढ़ सरकार का यह फैसला छत्तीसगढ़ में हाल के वर्षों में घट रही बाघ (Tiger) की आबादी में सुधार करने में कारगर साबित हो सकती है।
- छत्तीसगढ़ सरकार के द्वारा अधिसूचित यह अभ्यारण 'चीतों' को फिर से लाने की छत्तीसगढ़ सरकार की महत्वाकांक्षा के लिए एक रास्ता तैयार कर सकती है।
- छत्तीसगढ़ राज्य में आखिरी चीता 1940 के दशक में देखा गया था।

➢ गुरु घासीदास – तमोर पिंगला बाघ अभ्यारण :

- गुरु घासीदास – तमोर पिंगला बाघ अभ्यारण छत्तीसगढ़ राज्य में अचानकमार, इंद्रावती और उदंती सीतानदी के बाद चौथा बाघ अभ्यारण है।
- इस बाघ अभ्यारण का कुल क्षेत्रफल 2829.387 वर्ग किलोमीटर है।
- क्षेत्रफल के आधार पर इस बाघ अभ्यारण को भारत का तीसरा बड़ा बाघ अभ्यारण बनाता है।
- गुरु घासीदास – तमोर पिंगला बाघ अभ्यारण छत्तीसगढ़ के उत्तरी आदिवासी सरगुजा क्षेत्र के चार जिलों महेंद्रगढ़ – चिरमिरी – भरतपुर (MCB), कोरिया, सूरजपुर और बलरामपुर में फैला हुआ है।

- गुरु घासीदास – तमोर पिंगला बाघ अभ्यारण मध्य प्रदेश के "संजय दुबरी टाइगर रिजर्व" से सटा हुआ है।
- गुरु घासीदास – तमोर पिंगला बाघ अभ्यारण में बाघों के अलावा हाथी, स्लॉथ भालू, गिद्ध, मोर, भेड़िए, तेंदूए, उदबिलाव, चीतल, सियार, नीलगाय, बाइसन, लकड़बग्घा, लंगूर, कोबरा आदि वन्यजीव प्रजातियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।
- इस बाघ अभ्यारण में साल, साजा, घावड़ा, कुसुम जैसी वनस्पतियों की प्रजातियां भी शामिल है।
- इस बाघ अभ्यारण में पहाड़ियों, पठार, घाटियां और एक नदी प्रणाली भी शामिल है, जो इस अभयारण्य को एक समृद्ध वन्य जीवन के लिए विविध आवास बनाती है।

➢ छत्तीसगढ़ में बाघों की वर्तमान जनसंख्या :

- छत्तीसगढ़ वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार वर्तमान में छत्तीसगढ़ में 3 वयस्क और और दो शावक सहित कुल 30 बाघ हैं।
- इनमें से गुरु घासीदास – तमोर पिंगला टाइगर रिजर्व में फिलहाल 5 से 6 बाघ है।
- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA, National Tiger Conservation Authority) द्वारा वर्ष 2023 में जारी बाघों की स्थिति पर आखिरी आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य में 2014 में बाघों की कुल आबादी 46 थी, जो 2022 में घटकर 17 हो गई।

➢ छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा बाघों की आबादी को बढ़ावा देने की योजना :

- छत्तीसगढ़ वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार छत्तीसगढ़ सरकार नए बाघों के अनुपात को पूरा करने के लिए मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व एवं संजय दुबरी टाइगर रिजर्व से कुछ बाघिनों को नए गुरु घासीदास – तमोर पिंगला बाघ अभ्यारण में लाने का प्रस्ताव कर रहे है।
- इसके अलावा बाघों के संरक्षण के लिए छत्तीसगढ़ सरकार त्वरित प्रतिक्रिया बल बनाना, ग्रामीणों के साथ अच्छे संबंध बनाना, मुखबिर–आधारित वन्य जीव सुरक्षा/रोकथाम विकसित करना एवं पूर्णकालिक गार्ड तैनात करने जैसे अन्य उपायों पर काम कर रही है।
- छत्तीसगढ़ वन विभाग के अधिकारी एक व्यापक बाघ संरक्षण योजना (TCP, Tiger Conservation Project) तैयार कर रहे हैं, जो बाघ रिजर्वों में बाघ के संरक्षण के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों से निपटेगी।

➢ योजना के प्रमुख बिंदु :

- इस योजना के अंतर्गत टाइगर रिजर्व के पहाड़ी इलाके में गश्त करने में मदद के लिए मजबूत सड़क और वायरलेस कनेक्टिविटी विकसित करना है।

Result Mitra

- बाघों के शिकार का आधार बढ़ाने के लिए अभयारण्य में घासों के मैदानों एवं जल निकायों के विकास सहित राज्य के अन्य स्थानों से सैकड़ो चीतल और जंगली सुअरों को स्थानांतरित किया जा रहा है।
- मध्य प्रदेश के वन्य जीव अभयारण्यों के साथ छत्तीसगढ़ के रिज़र्व को गलियारा के माध्यम से जोड़ा जा रहा है ताकि मध्यप्रदेश के बढ़ती बाघ की आबादी में युवा और अल्प–वयस्क बाघ इस रास्ते से अभ्यारण में आ सकेंगे।

➢ छत्तीसगढ़ के अन्य टाइगर रिजर्व :

❖ सीतानदी उदंती टाइगर रिजर्व :–

- वर्ष 2008–09 में दो अलग-अलग रिजर्व उदंती और सीतानदी वन्य जीव अभ्यारण को मिलाकर सीतानदी–उदंती टाइगर रिजर्व बनाया गया।
- इस टाइगर रिजर्व का नाम इस अभ्यारण के बीच से बहने वाली उदंती एवं सीतानदी के नाम पर रखा गया।

❖ अचानकमार टाइगर रिजर्व :–

- यह टाइगर रिजर्व मैकाल पर्वत श्रेणियों के विशाल पहाड़ियों के बीच सतपुड़ा के 552 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है।
- इस अभ्यारण की स्थापना वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत 1975 में की गई।
- वर्ष 2007 में इस अभयारण्य को बायोस्फियर रिज़र्व एवं 2009 में टाइगर रिजर्व घोषित किया गया।
- छत्तीसगढ़ के सभी टाइगर रिजर्वों में सबसे अधिक बाघ इसी टाइगर रिजर्व में है।
- बाघों के अलावा इस टाइगर रिजर्व में तेंदुआ, बंगाल टाइगर, जंगली चीतल, धारीदार लकड़बग्घा, कैनीस, आलस भालू, सांभर हिरण, नीलगाय, चार सींग वाले मृग और चिंकारा जैसे वन्य जीव निवास करते हैं।
- वन्य जीव के अलावा इस अभ्यारण में साल, साजा, बीजा और बॉस जैसी वनस्पतियां विस्तृत रूप में पाई जाती है।

❖ इंद्रावती टाइगर रिजर्व :

- इंद्रावती टाइगर रिजर्व जिसकी स्थापना वन्यजीव संरक्षण अधिनियम–1972 के तहत 1981 में एक राष्ट्रीय उद्यान के रूप में की गई थी, जिसे बाद में टाइगर रिजर्व घोषित किया गया।
- छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में स्थित इस टाइगर रिजर्व को वन्य–जीवों के अतिदुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण के उद्देश्य से स्थापित किया गया था।

Result Mitra TM

- इस उद्यान का नाम इसके मध्य से गुजरने वाली इंद्रावती नदी के नाम पर रखा गया है।
- इंद्रावती नदी पूर्व से पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है।

❖ **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) :**

- राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA) एक वैधानिक निकाय है, जो पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करती है।
- वर्ष 2005 में टाइगर टास्क फोर्स के सिफारिश के बाद इसकी स्थापना वर्ष 2006 में की गई थी।
- यह प्राधिकरण बाघों के संरक्षण के लिए कार्य करने वाली भारत की सबसे व्यापक निकाय है।
- संशोधित वन्यजीव अधिनियम–2006 के तहत इसकी स्थापना की गई।
- इस प्राधिकरण में वन्यजीव संरक्षण और आदिवासी आबादी सहित स्थानीय समुदायों के कल्याण में योग्यता रखने वाले 8 पेशेवर विशेषज्ञ शामिल है।
- यह प्राधिकरण "प्रोजेक्ट टाइगर" योजना को लागू करने के लिए जिम्मेदार है।
- वर्ष 1973 में भारत सरकार द्वारा बाघ संरक्षण कार्यक्रम के नाम से एक संरक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया, जिसे "प्रोजेक्ट टाइगर" के नाम से जाना जाता है।

Result Mitra